



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	10.06.2020	09	03-08

**वर्ष ऋतु की गुण्य फसल, 45 दिन में हो जाती है तैयार**

# मिंडी की खेती से किसान कर सकते हैं आमदनी डबल

**हारिभूमि व्यूज़ || हिसार**

**फसल दें देती है।**

**खाद व उर्वरक**

गोबर की गली-सड़ी खाद 10 टन प्रति एकड़ बिजाई से 3 सप्ताह पहले डालें और समान रूप से भूमि में मिला दें। ओसत उपजाऊ जमीन में 40 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 24 किलोग्राम फास्फोरस प्रति एकड़ डालें। मिट्टी की जांच के बाद ही पोटाश डालें।

एक तिहाई नाइट्रोजन, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई से पहले मिट्टी में मिला दें। नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो भागों में एक बिजाई से लगभग तीन सप्ताह बाद व दूसरी मात्रा पौधों में फूल आने के समय डालें।

मिंडी के बीज के ढाने के लिए 25 से 35 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त होता है। अच्छी उपज के लिए हल्की अन्तर्याम दमत मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। यह 45 दिन में फसल देना आरंभ कर देती है।

यह 30 से 40 विवरण प्रति एकड़ घिन्डी में प्रोटीन, काबोहाइड्रेट,

**मिंडी की उन्नत लिस्टः**

वर्ष उपहार, हिसार उच्चत, हिसार लवीन, एकड़ी इ.42

**अच्छी आमदनी**

मिंडी की दोती करके किसान अच्छी आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। मांगदार विंडी उपजाऊ ने नंबर बना है। यह 45 विवरण प्रति एकड़ तक उपादान दें देती है।

डॉ. सुरेन्द्र धनदार, मिंडी विशेषज्ञ, कहते हैं कि लिंगम, फास्फोरस, मैग्नेशियम के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, सी तथा रेशा पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इसमें आयोडाइन की मात्रा अधिक होती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	10.06.2020	04	06-08

### प्रदेश में पीएचडी और मास्टर डिग्री कक्षाएं शुरू कराने को राज्यपाल से मिले दुष्यंत

राज्य बूरो, चंडीगढ़ : विश्वविद्यालयों में अनुसंधान (पीएचडी) कार्यों को पुनः शुरू कराने को लेकर डिटी सीएम दुष्यंत चौटाला ने राजभवन में राज्यपाल सत्यदेव नारायण आर्य से मुलाकात की। चौटाला ने बताया कि कोरोना के चलते लॉकडाउन के कारण विश्वविद्यालयों में कृषि और पशुपालन पर हो रहे शोध कार्यों पर विपरीत असर पड़ा है। लॉकडाउन के बाद विश्वविद्यालयों में खासकर स्नातकोत्तर और पीएचडी करने वाले छात्रों को प्रयोगशालाओं में वापस लाना जरूरी है ताकि उनकी रिसर्च व्यर्थ न चली जाए।

राज्यपाल से मुलाकात के बाद पत्रकारों से रुबरु उप मुख्यमंत्री



राज्यपाल प्रो. सत्यदेव नारायण आर्य से मिलते डिटी सीएम दुष्यंत चौटाला। ● डीपीआर ने बताया कि आज तमाम विवि बंद हैं, इसके चलते सभी रिसर्च कार्य बाधित हो रहे हैं। इस विषय पर पिछले दिनों छात्र इकाई इनसो की बैठक बुलाकर छात्रों के साथ चर्चा की गई। इस विषय पर उनकी हरियाणा कृषि विवि (एचएयू) के वाइस चांसलर से भी चर्चा हुई है।

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों के कैंपस में विदेशी छात्र मौजूद हैं, लेकिन हमारे प्रदेश के छात्र जो गेहूं, धान और पशुधन पर शोध कर रहे हैं, वे लॉकडाउन की वजह से अपने-अपने घर चले गए। इसकी वजह से शोध कार्यों पर गलत असर पड़ रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	09.06.2020	--	--

# वर्षा ऋतु में भिण्डी की खेती किसानों के लिए हो सकती है आय का साधन: प्रो. केपी सिंह

सिटी पल्स चूज़, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रौ. कौ.पौ. मिशन ने बताया कि वर्षा ऋतु अभी हीने को है और इस मौसम में भिण्डी की खेती किसानों के लिए अच्छी कास बन हो सकती है किसान भाई उपयुक्त वैज्ञानिक जनकारी का प्रयोग करते हुए अपने खेत से अधिक बहावाहा का वयदान पर आपना पहला कटाम बहाव सकते हैं। तो, मुख्य घटनाकूल, भिण्डी के विशेषता व उपयोगकारी गुण के लिए जारी कर दिया गया था और उसको खेत में भिण्डी का प्रमुख स्थान है व भासत भिण्डी उपकरण में प्रबल स्थान पर है। भिण्डी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैलिश्य, पर्याप्तीरय, ऐमेंशियम के अतिरिक्त वित्तीय ए. ची, ची तथा रोटी पर्याप्त जाता में मिलता है। इसमें आयोडीन की मात्रा अधिक होती है। उद्दोने बातावरण के लिए वर्षा ऋतु के बहावाहा दोनों मौसम में बहुत जा सकती है परन्तु यह बहावाहा के मौसम की मुश्तक फसल है व इस मौसम में ऐकड़ार अधिक होती है।

**जलवायु व भिण्डी :** इसकी पैदावार के लिए लाघु समय का गर्व व नमम कालायारण अच्छी यात्रा जाता है तथा यीज के दाने के लिए 25 से 35 दिनों मौसियस तापमान उपर्युक्त होती है। 20 दिनों मौसियस से कम तापमान पर यीजों का अंकुरण नहीं होता व 42 दिनों मौसियस से अधिक तापमान पर इसके पूर्ण फ़ूल फ़ूले जाते हैं। इसके लिए यिन्होंने से बहुत भिण्डी जिसमें जीवाशम की मात्रा अधिक हो व जल निकास उत्तम है, अच्छी रहती है। अच्छी उपज के लिए हड्डी अम्लीय द्रुट भिण्डी अधिक उपयुक्त होती है। खेत को 3-4 गहरी नुस्काँ करके भिण्डी को नमय व भू-भूरु कर लेना चाहिए। भिण्डी से 3 मासावाह पहले गोबर की खाद खेत में नुस्काँ करते समय उठाना बहावाहा कालीन फसल के लिए योग्य को समान बर्बादी में बहुत देना चाहिए।

**भिण्डी की उत्तम किसियाँ :** भिण्डी की उत्तम किसियों जैसे वर्षा उपराह, लिंग उत्तम, हिसार नवीन, एच.बी.एच. 142 अदि यह यीज ही बहुत वर्षा उपराह पौलिया रोग रोधी किस्म है जो बहावाह



के गौमध्य के लिए उपयुक्त है। यह 45 दिन में पहले देह आरप कर देती है और इसकी औसत पैदावार 35-40 किलोग्राम प्रति एकड़ है।

हिसार जात भी पौलिया रोग रोधी किस्म है जो गर्वी के गौमध्य के लिए उपयुक्त है। यह 47 दिन में पहले देह आरप कर देती है और इसकी औसत पैदावार 30-40 किलोग्राम प्रति एकड़ है।

हिसार नवीन पौलिया रोग रोधी किस्म है जो गर्वी व गर्मी के गौमध्य के लिए उपयुक्त है। यह 46-47 दिन में पहले देह आरप कर देती है और इसकी औसत पैदावार 40-45 किलोग्राम प्रति एकड़ है।

एच.बी.एच. 142 भी पौलिया रोग रोधी किस्म है जो वर्षा गौमध्य के लिए उपयुक्त है, जिसे गर्मी के गौमध्य में भी उपयोग जा सकता है। यह 47-48 दिन में पहले देह आरप कर देती है और इसकी औसत पैदावार 58 किलोग्राम प्रति एकड़ है।

**भिण्डी का समय व बीज की मात्रा :** उत्तरी भारत में साल में दो बार भिण्डी की भिण्डी होती है फ़लती कलारी में मात्र में जिसे गीयकालीन फसल कहते हैं तथा दूसरी जून से जुलाई में जिसे गीयकालीन फसल कहते हैं। गीयकालीन मौसम के लिए 16 से 18 किलोग्राम प्रति एकड़ व बरसात के 5-6 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज लानी।

**भिण्डी की विधि :** गीयकालीन फसल के लिए खेत में 30 से.मी. बड़ी ऊपराह बांध तथा ऊपराह के दोनों तरफ फिल्मों पर 10 से.मी. बड़ी दूरी पर भिण्डी बोटे। इससे पानी की बचत होती है। बरसात की फसल के लिए कलारी से कलारी की दूरी 45 से 60 से.मी. तथा पौधे से पौधे का फलस्ता 30 से.मी. रखें। भिण्डी से पहले बीज को गोबर पानी में डिपो दें और अगले दिन एक बंदा छाया में सुखा कर भिण्डी करें।

**उत्तराह :** गोबर की गती-स्ट्रैट लाद 10 दिन प्रति एकड़ भिण्डी से 3 मासावाह खाले और समान रूप से भूमि में लिया दें। औसत उपजाव कलारी में 40 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 24 किलोग्राम फार्मासोरस (मुद्र) प्रति एकड़ लानी। भिण्डी की जांच को आद ही पैटावा जानें। एक तिलह नाइट्रोजन, फार्मासोरस व पैटावा की पूरी बछड़ा भिण्डी से पहले भिण्डी में लिया दें। नाइट्रोजन को रोप गाज दो भागों में एक भिण्डी से लगाया जैसा खाद व दूसरी मात्रा दोनों में पूल अंडे के समान लानें।

**मिश्चाई व निर्दृढ़ गोदावई :** भिण्डी पौलिया देहकर करें। ऊपराहों की भिण्डी पर संतु भूमि की कमी होने पर भिण्डी के तुरन्त बाद रिस्चाई दें और दूसरी व तीसरी रिस्चाई 3-4 दिन के अंतर पर करें। गीयकालीन गौमध्य में 5-6 दिन के अंतर पर व गीयकालीन फसल में 3 अक्षरपक्षानुसार रिस्चाई करें। 2-3 बार निर्दृढ़ गोदावई करें।

**भिण्डी की तुकाई :** भिण्डी के फलों को नम अवस्था में रोल बनाने से पहले प्राप्त या सामग्रीकाल में तोड़ा चाहिए। गीयकालीन फसल में 30 किलोग्राम व गीयकालीन फसल में 40-45 किलोग्राम प्रति एकड़ भिण्डी के मुलायम फलों की पैदावार प्राप्त हो जाती है। उपराह वैज्ञानिक सब्ज कियाजों को कार्यान्वयित करने पर किसान भाई भिण्डी की अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

### लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन ( जीवन आधार )	09.06.2020	---	---

#### भिण्डी की वैज्ञानिक खेती करके बनाएं आय का साधन : केपी सिंह

SHARE    0    f    G+   



हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा है कि वर्षीय खेतों में भिण्डी की खेती किसानों के लिए आय का साधन हो सकती है। विसान उपयुक्त वैज्ञानिक जानकारी का प्रयोग करते हुए अपने खेत से आधिक स्वतन्त्रता के पायदान पर अपना पहला कदम बढ़ा सकते हैं।

भिण्डी के विशेष जूलाई और डिसेम्बर के निवेदक झींगे, सुरेन्द्र धनराखड़ ने बताया कि हरी सदियर्या में भिण्डी की प्रमुख स्थान है और आस्त भिण्डी उत्पादन में प्रथम स्थान पर है। भिण्डी से प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, कॉलेजिन, फास्टोर्स, मैट्रेनिंग के अतिरिक्त विटामिन ए, बी, बी और तापा रेता पर्याप्त मात्रा में मिलता है। इसके आवाहन की मात्रा अधिक होती है। उन्होंने बताया कि यह फसल गर्मी व बरसात दोनों मौसम से बढ़े जा सकती है और उपन्तु यह बरसात के मौसम की मुख्य फसल है व इस मौसम से पैदावार अधिक होती है।

जलालपुर व मिठी : इसके पैदावार के लिए लाज्बै समय का गर्म व नरस बाराबरण अंतर भाना जाता है तथा बीज के उत्पन्न के लिए 25 से 35 डिग्री सीलिंग्स तापमान उपयुक्त होता है। 20 डिग्री सीलिंग्स से सम तापमान पर बीजों का अनुरोध नहीं होता व 42 डिग्री सीलिंग्स से अधिक तापमान पर इसके कूल छुट्के लाते हैं। इसके लिए चिक्की से बहुत मिठी जिसमें जीवाश की मात्रा अधिक हो व जल निकास उत्पन्न हो, अट्टी रहती है। अट्टी पत्र के लिए हल्के अम्लीय दुट्ट और मिठी अधिक उपयुक्त होती है। खेत को 3-4 गहरा जुलाई करके मिठी को नरस व भुर-भुरा कर लेना चाहिए। बिजाई से 3 सालाह पहले गोबर खेत में जुलाई करते समय छालों व बरसात कलीन फसल के लिए खेत को समान क्यारियों में बांट देना चाहिए।

भिण्डी की उन्नत किसिन्हों : भिण्डी की उन्नत किसिन्हों जैसे वर्षीय उपहार, हिसार उन्नत, हिसार नवीन, एच.बी.एच. 142 आदि का बीज ही बांटे। वर्षीय उपहार पीलिया रोग रोधी विस्त है जो बरसात के मौसम के लिए उपयुक्त है।

हिसार उन्नत और पीलिया रोग रोधी विस्त है जो गर्मी के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह 47 दिन में फल देना आंशक कर देती है और इसकी औसत पैदावार 30-40 विंडल प्रति एकड़ है।

हिसार नवीन पीलिया रोग रोधी विस्त है जो वर्षीय व मर्गी के मौसम के लिए उपयुक्त है। यह 46-47 दिन में फल देना आंशक कर देती है और इसकी औसत पैदावार 40-45 विंडल प्रति एकड़ है।

एच.बी.एच. 142 और पीलिया रोग रोधी विस्त है जो वर्षीय मौसम के लिए उपयुक्त है, जिसे गर्मी के मौसम में भी उत्पाद जासकता है। यह 47-48 दिन में फल देना आंशक कर देती है और इसकी औसत पैदावार 50 विंडल प्रति एकड़ है।

बिजाई का समय बीज की मात्रा : उत्तरी भारत में साल में दो बार भिण्डी की बिजाई होती है पहली फसली से मार्च में जिसे गोप्यकलीन फसल कहते हैं तथा दूसरी जून से जुलाई में जिसे वर्षीकालीन फसल कहते हैं। गोप्यकलीन मौसम के लिए 16 से 18 किलोग्राम प्रति एकड़ व बरसात के 5-6 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज डालें।

बिजाई की विधि : गोप्यकलीन फसल के लिए खेत में 30 से 35 सी.मी. चाउलियां बनाएं तथा डालें के दोनों तरफ फिलोरो पर 10 से 12 सी.मी. की दूरी पर बिजाई करें। इससे पानी की बचत होती है। बरसात की फसल के लिए कराव से कराव की दूरी 45 से 60 से 80 सी.मी. तथा पोधे से पोधे का फसला 30 से 35 सी.मी. रखें। बिजाई से पहले बीज के गतान्त्र पानी में डिगो दें और आगे दिन एक घंटा जाया में सुखा कर बिजाई करें।

खाद व तंत्रिका : गोबर की गोली-मसी खाद 10 टन प्रति एकड़ बिजाई से 3 सप्ताह पहले डालें और समान रूप से भूमि में मिला दें। औसत उपजाऊ जमीन में 40 किलोग्राम नाइट्रोजन तथा 24 किलोग्राम फास्टोरस (धूम) प्रति एकड़ डालें। मिठी को जांच के बाद ही पोटाश डालें। एक तिहाई नाइट्रोजन, फास्टोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बिजाई से पहले मिठी में मिला दें। नाइट्रोजन की शेष मात्रा दो भागों में एक बिजाई से लवक्षण लीन स्थान बाये व दूसरी मात्रा पीछे में डालें।

सिंचाई व निराई गोडाई : बिजाई पहले देकर करें। डोलियों की बिजाई पर खेत में नमी की कमी होने पर बिजाई के तुरन्त बाय-सिंचाई दें और दूसरी व तीसरी सिंचाई 3-4 दिन के अंतर पर करें।

गोप्यकलीन मौसम में 5-6 दिन के अंतर पर वर्षीकालीन फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। 2-3 बार निराई गोडाई करें।

भिण्डी की तुराई : भिण्डी के फलों को नमी अवश्यकता से बचाने से पहले प्रातः, या साँवाल में लोडला चाहिए। गोप्यकलीन फसल में 30 विंडल व वर्षीकालीन फसल में 40-45 विंडल प्रति एकड़ भिण्डी के मूलायम फलों की पैदावार प्राप्त हो जाती है। उपरोक्त वैज्ञानिक सभ्य कियाओं का कार्यान्वयन करने पर विसान आई भिण्डी की अट्टी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

